



Be Mains Ready

कारकीय-संरचना, लिंग-व्यवस्था और वचन-रूप के धरातल पर अपभ्रंश, अवहट्ट और पुरानी हन्दि की तुलना कीजिये।

25 Jun 2019 | रवीज़न टेस्ट्स | हन्दि साहित्य

दृष्टिकोण / व्याख्या / उत्तर

अपभ्रंश, अवहट्ट और पुरानी हन्दि हन्दि भाषा की वकिस यात्रा के वभिन्न पड़ाव हैं। प्रत्येक पड़ाव पर कारक व्यवस्था, लिंग व्यवस्था तथा वचन व्यवस्था में कुछ परिवर्तन आते गए। इन परिवर्तनों के आधार पर इन भाषाओं का कारक व्यवस्था, लिंग व्यवस्था व वचन व्यवस्था के अनुसार तुलनात्मक अध्ययन निम्नानुसार है:

(i) कारक व्यवस्था: अपभ्रंश में नरिवभिक्तिकि प्रयोग प्रारंभ हो गए और सभी प्रातपिदकि पहले स्वरान्त, फरि अकारान्त हुए। अवहट्ट व पुरानी हन्दि में भी यही प्रवृत्ति बनी रही। अपभ्रंश में परसर्गों का आरंभिकि वकिस हुआ तथा संबंध कारक में 'का' परसर्ग का वकिस हुआ। 'हन्दि' वभिक्तिकिसे प्रायः सभी कारकों का काम लिया जाता है। अवहट्ट में परसर्गों का वकिस और बढ़ा। कर्ता कारक के लिए 'ने' तथा करण व अपादान के लिए 'से' परसर्ग का वकिस प्रमुख घटनाएँ हैं। हन्दि वभिक्तिकि का प्रयोग बना रहा कर्ता के लिए 'ए' वभिक्तिकि अत्यधिकि प्रयोग हुआ। पुरानी हन्दि में परसर्गों का और वकिस हुआ। कर्म कारक के लिए 'को' तथा अधिकरण के लिए 'पर' परसर्ग का वकिस हुआ।

(ii) लिंग व्यवस्था: अपभ्रंश में संस्कृत के तीन लिंगों के स्थान पर दो लिंगों (पुल्लगि व स्त्रीलगि) की व्यवस्था रही, यद्यपि नागर अपभ्रंश में नपुंसक लिंग कहीं-कहीं बना रहा। अवहट्ट में भी दो लिंगों की व्यवस्था बनी रही। पुरानी हन्दि में स्त्रीलगि शब्द इकारान्त होने लगे।

(iii) वचन व्यवस्था: अपभ्रंश में द्विवचन का लोप हो गया। संस्कृत के तीन वचनों के स्थान पर दो ही वचन (एक वचन एवं बहुवचन) बचे। अवहट्ट में संज्ञा बहुवचन के लिए न्ह, न्हपरसर्गों का प्रयोग होने लगा, जैसे-हाथन्ह, पुहुपुन्ह। पुरानी हन्दि में बहुवचन बनाने के नयिम नश्चिति होने लगे। पुल्लगि संज्ञाओं के लिए 'ए' व 'अन' तथा स्त्रीलगि संज्ञाओं के लिए 'अन', 'न्ह' प्रत्ययों का प्रयोग व्यापक रूप से होने लगा। उदाहरण- बेटा झ बेटे (पुल्लगि); सखी झ सखअिन (स्त्रीलगि)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/be-mains-ready-daily-answer-writing-practice-question/papers/2019/be-mains-ready-day-15-hindi-literature-1-old-hindi-comparison/print>